License Information

Study Notes (Biblica) (Hindi) is based on: Biblica Study Notes, Biblica Inc., 2023, which is licensed under a CC BY-SA 4.0 license.

This PDF version is provided under the same license.

Study Notes (Biblica)

1 पतरस 1:1–12

पतरस ने विश्वासियों से कहा कि उनका परमेश्वर के साथ एक वाचा संबंध है। यह नई वाचा, जो यीशु के क्रूस पर प्राण त्यागते समय उनके लहू के माध्यम से प्रभाव में लाई गई थी।

इस वाचा में परमेश्वर का हिस्सा यह है कि वह नया जन्म और एक जीवित आशा प्रदान करता है। नया जन्म वह तरीका है जिससे विश्वासियों के फिर से जन्म लेने की बात की जाती है। विश्वासियों का हिस्सा यह है कि वे यीशु मसीह की आज्ञा का पालन करें। जब लोग यीशु पर विश्वास करते हैं, तो उन्हें नया जन्म मिलता है। यही उनके उद्धार की शुरुआत है।

विश्वासियों का उद्धार तब पूरा होगा जब वे अपने प्रभु यीशु मसीह को देखेंगे। वे उनका जीवित आशा हैं। परमेश्वर ने इस उद्धार की योजना बहुत पहले बनाई थी, जब यीशु का जन्म भी नहीं हुआ था। भविष्यवक्ताओं ने इस्राएल में बहुत पहले इसके बारे में कुछ समझा था। वे जानते थे कि यह मसीह के कष्ट और बलिदान के माध्यम से आएगा। फिर मसीहा को महिमा प्राप्त होगी। यह सुसमाचार विश्वासियों को यीशु के प्रति प्रेम से भर देता है।

1 पतरस 1:13–2:3

क्योंकि विश्वासी यीशु से प्रेम करते हैं, वे परमेश्वर की आज्ञा का पालन करते हैं। वे यीशु के उदाहरण का अनुसरण करके एक पवित्र जीवन जीने का प्रयास करते हैं।

यीशु में कोई दोष नहीं है, और उनके अंदर कभी भी बुरे इच्छाएँ नहीं होतीं। पतरस ने यीशु के बारे में संदेश को परमेश्वर का जीवित वचन कहा। इसका अर्थ है कि यीशु के बारे में सत्य केवल प्रचारित किए गए शब्दों से अधिक है। इस संदेश में लोगों के जीवन को बदलने की शक्ति है।

जो लोग परमेश्वर के वचन पर विश्वास करते हैं, वे एक नए जीवन की शुरुआत करते हैं। यही नए जन्म का अर्थ है। वे परमेश्वर के राज्य में जन्म लेते हैं और यीशु के आगमन की प्रतीक्षा कर रहे हैं। इस प्रकार वे पृथ्वी पर बाहरी लोगों की तरह हैं जब तक यीशु वापस नहीं आते।

विश्वासी इस नए जीवन को शिशुओं की तरह शुरू करते हैं। वे विश्वास में बढ़ते हैं जैसे वे परमेश्वर का वचन प्राप्त करते हैं और उसका अध्ययन करते हैं। पतरस ने इसे दूध पीने और परमेश्वर कितने अच्छे हैं यह चखने के समान बताया कि।

1 पतरस 2:4–10

पतरस ने यीशु का वर्णन एक भवन के महत्वपूर्ण और जीवित पत्थर के रूप में किया। वह भवन मंदिर था।

पतरस यरूशलेम के मंदिर के बारे में बात नहीं कर रहे थे। उनका मतलब कलीसिया था। कलीसिया उन लोगों से बनी है जो यीशु के हैं।

इस्राएल के अधिकांश लोगों ने स्वीकार नहीं किया कि यीशु परमेश्वर द्वारा भेजे गए मसीह हैं। पतरस ने इसके बारे में बात करने के लिए भजन संहिता 118 और यशायाह अध्याय 8 के शब्दों का उपयोग किया।

लेकिन जो लोग पतरस का पत्र प्राप्त कर रहे थे, वे यीशु में विश्वास करते थे। इस कारण, पतरस ने कहा कि वे भी जीवित पत्थर थे। वे भी जीवित पत्थर हैं। वे उस भवन या घर का हिस्सा हैं जो परमेश्वर के लिए है।

इसका अर्थ यह है कि यीशु के अनुयायी संसार में जहाँ भी हों, वे परमेश्वर की आराधना कर सकते हैं। और जहाँ भी वे जाते हैं, वे दूसरों को दिखा सकते हैं कि परमेश्वर कौन हैं।

पतरस ने विश्वासियों का वर्णन उन शब्दों से किया जो हमेशा इस्राएलियों का वर्णन करने के लिए उपयोग किए जाते थे। इसमें याजकों का राज्य और एक पवित्र राष्ट्र होना शामिल था। इससे यह दिखाया गया कि जो भी यीशु का अनुसरण करते हैं, वे परमेश्वर के लोग हैं।

1 पतरस 2:11–25

पतरस ने जिन विश्वासियों को पत्र लिखा था, वे पूर्वी रोमी प्रदेशों में फैले हुए थे। वे ऐसे लोगों के बीच रहते थे जो यीशु में विश्वास नहीं करते थे। पतरस चाहते थे कि वे भक्तिपूर्ण और पवित्र जीवन जीवन जिएं । इससे अविश्वासियों को पता चलेगा कि परमेश्वर कौन हैं।

पतरस ने इस संबंध में दो मुख्य निर्देश दिए। पहला, विश्वासियों को पापपूर्ण इच्छाओं के बजाय अच्छे कर्म या भले कार्य करने चाहिए। दूसरा, उन्हें परमेश्वर के प्रति अपनी श्रद्धा को दिखाते हुए अधिकारियों का सम्मान करना चाहिए।

पतरस जानते थे कि मानव अधिकारी अक्सर न्यायपूर्ण व्यवस्था बनाए रखने में असफल रहते हैं। वे अक्सर निर्दोष लोगों को दंडित करते हैं। इस बारे में पतरस के जीवन की एक कहानी प्रेरितों के काम अध्याय 12 में दर्ज है। पतरस यह नहीं सिखा रहे थे कि लोगों के लिए बुरा व्यवहार सहना अच्छा है। वे यह नहीं सिखा रहे थे कि कुछ लोगों को दूसरों को

नुकसान पहुंचाने की अनुमति है। वे यह दिखा रहे थे कि विश्वासियों का कष्ट यीशु के कष्ट के समान है।

जब यीशु के साथ अन्याय हुआ, तो उन्होंने उन्हें कष्ट देने वालों पर आक्रमण नहीं किया। उन्होंने परमेश्वर पर भरोसा किया कि वह न्याय के दिन न्यायपूर्ण निर्णय करेंगे। यही उदाहरण है जिसका अनुसरण विश्वासियों को करना चाहिए।

1 पतरस 3:1–9

पतरस ने पत्नियों और पतियों को विशेष तरीकों से जीने की शिक्षा दी। इनमें से कई तरीके पतरस के समय में प्रचलित तरीकों से भिन्न थे। उनके निर्देशों का मुख्य उद्देश्य विश्वासियों को मदद करना था जिससे की वे अविश्वासियों को परमेश्वर कौन है यह दिखा सके। यह उनके जीवन जीने के तरीके से प्रकट होता था।

एक और उद्देश्य यह था कि विवाहित विश्वासी एक साथ प्रार्थना कर सकें। शुरुआती कलीसियाओं में, यह आम था कि स्त्रियाँ पुरुषों से पहले विश्वास करने वाली बन जाती थीं। इसने पत्नियों को यह अवसर दिया कि वे अपने पतियों को दिखा सकें कि यीशु किस प्रकार से लोगों के जीवन को बदलते हैं।

पतरस ने सिखाया कि एक पत्नी की वास्तविक सुंदरता उसके दिखावे से नहीं आती। यह उस आशा से आती है जो वह परमेश्वर में रखती है। यह आशा उसे भय के बजाय कोमलता से भर देती है। एक पति का वास्तविक अधिकार इस बात में नहीं है कि वह अपनी पत्नी को कुछ करने के लिए मजबूर करे। बल्कि यह उसमें है कि वह अपनी पत्नी का सम्मान करे, क्योंकि वे परमेश्वर के सामने समान हैं। पति को अपनी शक्ति का उपयोग अपनी पत्नी की रक्षा और देखभाल के लिए करना चाहिए।

जो पुरुष और स्त्रियाँ, जो विश्वास करते हैं, दोनों को परमेश्वर का अनन्त जीवन का उपहार मिलता है, पतरस ने सभी विश्वासियों को एक-दूसरे के प्रति विनम्र बने रहने की शिक्षा दी। उन्हें उन लोगों के साथ बुरा नहीं करना चाहिए जिन्होंने उनके साथ बुरा किया हो। इसके बजाय, उन्हें प्रेम और दया भरे शब्दों का उपयोग करना चाहिए। यह एक तरीका था जिससे वे भले कार्य कर सकते थे, जिन्हें अविश्वासी भी देख पाते थे।

1 पतरस 3:10–22

पतरस का पत्र जिन विश्वासियों को मिला उन्हें यीशु का अनुसरण करने के कारण कष्ट सहना पड़ रहा था। पतरस ने उन्हें इन परिस्थितियों से निपटने के लिए निर्देश दिए। उनके निर्देश थे कि वे भले कार्य करते रहें और यीशु को प्रभु के रूप में सम्मानित करते रहें।

उन्हें अपनी आशा के बारे में प्रश्नों का उत्तर कोमलता और आदर के साथ उत्तर देना चाहिए। पतरस ने विश्वासियों को प्रोत्साहित किया कि जैसे लोगों ने यीशु को अन्यायपूर्ण कष्ट दिए, वैसे ही वे भी सहन करें। यीशु इसीलिए कष्ट सहने को तैयार थे ताकि वे लोगों को परमेश्वर के पास वापस ला सकें। लोगों को परमेश्वर के साथ सही संबंध में लाना ही इसका उद्देश्य था।

यीशु को मार दिया गया और फिर पवित्र आत्मा ने उन्हें फिर से जीवन में लौटाया। इसी प्रकार यीशु ने विजय और नियंत्रण प्राप्त किया। उन्होंने शैतान और सभी दुष्ट आत्मिक प्राणियों, शक्तियों और अधिकारों पर नियंत्रण पाया। पतरस ने इन्हें "कैद में आत्माएँ" कहा। उनके लिए यीशु का पुनरुत्थान यह घोषणा था की अब उनकी शक्ति टूट चुकी है।

बपतिस्मा ने विश्वासियों को याद दिलाया कि वे यीशु की बचाने की शक्ति के बारे में निश्चित हो सकते हैं। सैकड़ों साल पहले, परमेश्वर ने नूह के परिवार को जलप्रलय से सुरक्षित निकाला था। उसी तरह, परमेश्वर विश्वासियों को भी उनके सभी कष्टों से निकालकर सुरक्षित मार्गदर्शन करेंगे, जब वे निष्ठापूर्वक यीशु का अनुसरण करेंगे।

1 पतरस 4:1–19

पतरस ने उन विश्वासियों के जीवन के तरीके का वर्णन किया जिनके लिए वे लिख रहे थे। यह उस तरीके से बहुत अलग था जैसा कि परमेश्वर चाहते थे कि वे जिएँ। उनके आसपास के अविश्वासी चाहते थे कि वे उन्हीं बुरे और पापी रास्तों पर चलते रहें। लेकिन पतरस ने विश्वासियों को याद दिलाया कि उनका जीवन पृथ्वी पर अधिक समय तक नहीं रहेगा, इसलिए उन्हें यहाँ रहते हुए वही करना चाहिए जो परमेश्वर चाहता है।

इसमें प्रार्थना करना, लोगों का अपने घरों में स्वागत करना और दूसरों से गहराई से प्रेम करना शामिल था। इसमें उस अनुग्रह और शक्ति को प्राप्त करना शामिल था जो परमेश्वर ने उन्हें दी। इसमें दूसरों की सेवा करने के लिए आत्मा के वरदानों का उपयोग करना शामिल था।

मसीही जीवन में पृथ्वी पर रहते हुए कष्ट सहना भी शामिल था। यह कोई आश्चर्य की बात नहीं होनी चाहिए, क्योंकि मसीह ने भी कष्ट सहे और वे उसके उदाहरण का अनुसरण कर रहे थे। पतरस के समय में, कुछ विश्वासियों को यीशु का अनुसरण करने के कारण मृत्यु का सामना करना पड़ा था। इसके बारे में प्रेरितों के काम अध्याय 7 और 12 में बताया गया है। उनकी मृत्यु अन्य मनुष्यों के मानकों से किए गए न्याय का परिणाम थी, जिसे पतरस ने "मनुष्य की दृष्टि से न्याय" कहा।

पतरस ने विश्वासियों को प्रोत्साहित किया कि जो लोग उनके साथ बुरा व्यवहार करते हैं, उनका न्याय स्वयं परमेश्वर करेगा। भले ही कोई विश्वासी मर जाए, परमेश्वर की शक्ति उनके आत्मिक भाग को जीवन देगी। परमेश्वर ने उन्हें बनाया है और वह उनके प्रति विश्वासयोग्य रहेगा। इसलिए पतरस

चाहते थे कि विश्वासियों को परमेश्वर पर भरोसा रखना चाहिए और अच्छे कार्य करना जारी रखना चाहिए।

1 पतरस 5:1–5

पतरस ने कलीसिया के प्राचीनों और प्रधानों को परमेश्वर के लोगों के ऊपर चरवाहों के रूप में वर्णित किया।

उनके निर्देश उनके लिए वैसे ही थे जैसे यीशु के निर्देश उनके शिष्यों के लिए लूका 22:24–30 में थे।

कलीसिया के प्रधानों को घमंडी नहीं होना चाहिए या शासकों की तरह व्यवहार नहीं करना चाहिए। यीशु मुख्य चरवाहा है और उन्हें उनका पालन करना चाहिए।

उन्हें सेवा करने वाले अगुआ होने के यीशु के उदाहरण का अनुसरण करना चाहिए।

जो अगुआ विश्वासपूर्वक सेवा करते हैं, वे यीशु के धरती पर लौटने पर उसकी महिमा को साझा करेंगे।

अन्य विश्वासियों को उन अगुएं लोगों का सम्मान करना चाहिए और उनका अनुसरण करना चाहिए जो यीशु की तरह नेतृत्व करते हैं।

1 पतरस 5:6–14

पतरस ने अपने पत्र का समापन विश्वासियों को कई तरीकों से प्रोत्साहित करके किया। उन्होंने उन्हें याद दिलाया कि परमेश्वर वास्तव में अपने लोगों की परवाह करते हैं। और वे पूरी तरह से परमेश्वर पर भरोसा कर सकते हैं।

शैतान विश्वासियों को परमेश्वर पर संदेह करने और उनकी आज्ञा मानने से रोकने के लिए प्रेरित करता है। पतरस ने इसे इस प्रकार वर्णित किया कि शैतान उन्हें निगलने का प्रयास करता है। लेकिन परमेश्वर विश्वासियों को शैतान का विरोध करने के लिए आवश्यक अनुग्रह देता है। वे विनम्र हैं लेकिन परमेश्वर शक्तिशाली है। वह उन्हें उस पर दृढ़ रहने की शक्ति देता है जिस पर वे विश्वास करते हैं।

विश्वासी अपने संघर्षों और कष्टों में अकेले नहीं हैं। पूरे संसार में परमेश्वर के लोग भी इसी प्रकार बुराई के विरुद्ध संघर्ष कर रहे हैं और पीड़ित हो रहे हैं। वे परमेश्वर के परिवार और मित्रता में एक साथ जुड़े हुए हैं।

सीलास, मरकुस और कलीसिया से अभिवादन, जिन्होंने विश्वासियों को भी प्रोत्साहित किया। पतरस ने रोम के बारे में बात करने के लिए बाबेल नाम का उपयोग किया।